केंद्रीय विद्यालय क्रमांक -1

पणम्बूर, मंगलूरु

प्रतिबिम्ब

वार्षिक पत्रिका

2022-23

विद्यालय पत्रिका

संपादकीय परिषद

-: मुख्य संपादक :-

डॉ. अशोक कुमार प्रसाद

-: सह संपादक :-

श्री मनोज एम एन

श्री शिवाराम शेट्टी

श्रीमती तृप्ति

श्री कौशिक राव

प्राचार्य का संदेश

प्रिय विद्यार्थियों,

विद्यालय की वार्षिक पत्रिका "प्रतिबिंब" के प्रकाशन पर मुझे अत्यधिक प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है । विद्यालय पत्रिका पाठ्य-सहगामी क्रियाओं में एक महत्त्वपूर्ण स्तम्भ है, जिसके अभाव में शिक्षा को पूर्णता प्रदान नहीं कर सकते ।

चूँकि विद्यालय पत्रिका एक ऐसा मंच है जहां बालमन अपनी कल्पना की अभिव्यक्ति हेतु स्वतंत्र होता है, जो उसके व्यक्तित्व विकास एवं सृजनात्मक क्षमता में अभिवृद्धि हेतु अत्यंत आवश्यक है । बाल मन में उपजती कल्पनाएँ विद्यालय में ही अभिव्यक्ति प्राप्त कर पूर्णता प्राप्त करती है एवं उत्तरोत्तर विकास को प्राप्त होती हैं ।

वस्तुतः विद्यालय ही वह पवित्र स्थान है जहां विद्यार्थी रूपी पौधों को आवश्यकतानुसार काँट-छांट कर उन्हें तरु रूप में भविष्य हेतु तैयार किया जाता है, जिससे वे आगामी झंझावातों से सफलतापूर्वक जूझ सकें । स्वामी विवेकानंद जी ने कहा है – "सच्ची शिक्षा वह प्रशिक्षण जिसके द्वारा विचारधारा एवं भावाभिव्यक्ति को नियोजित, नियमित एवं कल्याणकारी बनाया जा सकता है ।"

मैं संपादकीय समिति को पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ क्योंकि उनकी भूमिका यहाँ भी उतनी ही महत्त्वपूर्ण है जितनी कि शिक्षण के दौरान कक्षाओं में । वास्तव में आधुनिक शिक्षक का कार्य जंगलों को काटना नहीं अपितु रेगिस्तान को सींचना है ।

गणेश एस इंद्राले
प्राचार्य

मुख्य संपादक की कलम से

प्राचीन भारतीय आचार्यों ने सृजन के तीन हेतुओं की पहचान की है – प्रतिभा, व्युत्पत्ति एवं अभ्यास । प्रतिभा जन्मजात है, व्युत्पत्ति सामाजिक संसर्ग के परिणाम स्वरूप उत्पन्न ज्ञान है और अभ्यास का तात्पर्य निरंतर किए जा रहे प्रयासों के परिणाम स्वरूप रचनात्मकता के विकास से है । सामाजिक दृष्टि से विद्यालय एक ऐसा ही मंच है जिसके भीतर छात्रों में रचनात्मक क्षमता का विकास इन तीनों मानदंडों पर तैयार किया जाता है । यद्यपि विद्वानों ने रचना के अन्य अनेक कारण भी बतलाए हैं । आचार्य मम्मट ने अपने ग्रंथ काव्यप्रकाश में शक्ति, व्युत्पत्ति और अभ्यास को काव्य का बीज रूप स्वीकार किया है, किन्तु उनकी शक्ति ही यहाँ प्रतिभा का पर्याय है :-

"शक्तिनिपुणता लोक काव्यशास्त्रद्यवेक्षणात ।
काव्यज्ञ शिक्षयाभ्यास इति हेतुस्तद्भुवे ॥"

\- काव्यप्रकाश

विद्यार्थी सामाजिक परिवेश में घट रही घटनाओं से सीखते हैं, रचनाकारों को पढ़ते हैं और विद्यालय की गतिविधिओं में भाग लेते हुए चिंतन की प्रक्रिया से समृद्ध होते हैं । इस चिंतन के फलस्वरूप विद्यार्थियों में सृजनात्मकता का संचार होता है । विद्यालय की ई –पत्रिका विद्यार्थियों की इस अभिव्यक्ति का प्रकाशन करती है और इसे समाज में प्रसारित करने का कार्य भी करती है । ये प्रसार ई-पत्रिका के माध्यम से और अधिक सुगम, तकनीकी तथा विस्तृत पटल पर संभव होता है ।

प्रत्येक समाज की सकारात्मक गतिशीलता हेतु ऐसी सृजनात्मक गतिविधियों की महत्ता स्वयंसिद्ध है । प्रस्तुत पत्रिका में विद्यालय के वर्ष भर के विभिन्न क्रिया-कलापों का परिचय देते हुए विद्यालय की उपलब्धियों को भी विवरण के साथ रेखांकित किया गया है । पत्रिका में लेख कहानी, चुटकलें, कविताएं आदि शामिल किए गए हैं ।

अंत में मैं अपने सभी शिक्षकों के सहयोग के लिए आभार व्यक्त करता हूँ । विशेषतः हमारे प्राचार्य श्री गणेश एस इंद्राले जी को संपादक मंडल की तरफ से आभार व्यक्त करता हूँ जिनके कुशल नेतृत्व, मार्गदर्शन एवं प्रेरणा के द्वारा ही यह कार्य सुगम एवं संभव हो सका । मैं विद्यार्थियों को भी बधाई देता हूँ जिन्होंने बड़े उत्साह से अपनी रचनाएँ प्रेषित की ।

डॉ. अशोक कुमार प्रसाद
स्नातकोत्तर शिक्षक (हिन्दी)

माता पिता का प्यार

हम सभी का जीवन हमारे माता-पिता की देन है। हमारे सबसे पहले गुरु हमारे माता-पिता होते हैं। जब हम बाल अवस्था में होते हैं तो वे हमारा सहारा होते हैं हम पूर्णता से उन पर निर्भर होते हैं। हमारे माता-पिता सदैव हमारी भलाई चाहते हैं। वे है जो उंगली पकड़ कर हमें चलना सिखाते हैं वे है जो कंधे पर हमें मेले घुमाते हैं। परंतु जैसे-जैसे हम किशोरावस्था में प्रवेश करते हैं हमें उनके सुझाव ताने लगने लगते हैं। वह है जो हमें संस्कार देते हैं, शिक्षा देते हैं ,आत्म सम्मान बढ़ाते हैं, हमें दुनिया के तौर- तरीकों से परिचित कराते हैं। परंतु इस समय में आने वाली चंचलता के कारण हम उन्हें "टेकन फॉर ग्रांटेड" अर्थात उन्हें कम आंकते हैं , कम मानते हैं और यह भी मानते हैं कि वह हमेशा हमारे साथ रहेंगे। हम अनजाने में ही उनका दिल दुखाते हैं, उन्हें परेशान करते हैं। उन्हें हमसे कई उम्मीदें होती हैं,जो हमारे लिए ही होती हैं। पर हम उनकी बातों का बुरा मान लेते हैं। यह बात तो सत्य है कि आपके दोस्त आज आपके साथ हैं शायद कल नहीं होंगे परंतु माता-पिता वह हमेशा आपकी ढाल बने खड़े रहेंगे। इसलिए उनका विश्वास कभी मत तोड़िए, कभी उन्हें तकलीफ मत दीजिए। आपकी एक हंसी से वह खिलखिला उठते हैं तो उन्हें देख कर हंस दिया कीजिए। उन्हें बताइए कि आप उनसे कितना प्यार करते हैं। अपना मन सही चीजों में लगाइए। आप कितने ही बड़े क्यों ना हो जाए उनके लिए आप हमेशा छोटे ही रहेंगे। यह ज्ञान पसंद आया हो तो लाइफ में आज़मा कर भी देखें।

अर्पिता सिंह
आठवीं 'अ'

स्वतंत्रता का महत्व

स्वतंत्रता जीवन है। हर कोई मुक्त होना चाहता है। स्वतंत्रता के बिना जीवन नीरस हो जाता है। स्वतंत्रता का अर्थ है किसी के हस्तक्षेप के बिना सोचने और निर्णय लेने का अवसर। स्वतंत्रता का अर्थ कानूनों या सामाजिक रीति-रिवाजों की परवाह किए बिना कुछ भी करना नहीं है। स्वतंत्रता का अर्थ है दूसरों के अनुचित हस्तक्षेप का अभाव। स्वतंत्रता का अर्थ है कि व्यक्ति को समाज के न्यायोचित मानदंडों के अनुसार जीवन का मार्ग चुनने की स्वतंत्रता होनी चाहिए। स्वतंत्रता हमारे जीवन के उद्देश्यों में से एक है। यह हम में से प्रत्येक के भीतर एक स्वाभाविक प्रवृत्ति है। हम अपनी स्वतंत्रता का आनंद ले सकते हैं लेकिन दूसरों का उल्लंघन करने की कीमत पर नहीं। हमें जितनी अधिक स्वतंत्रता है, हम उतने ही अधिक जिम्मेदार बनते हैं। किसी को भी हमारे अधिकारों का उल्लंघन करने का अधिकार नहीं है।

एक कैदी के लिए जेल से बाहर होने का मतलब आजादी है। ऐसा इसलिए है क्योंकि अगर हम यह समझने की कोशिश करेंगे कि समाज में हर कोई क्या करना चाहता है तो यह पूरी तरह से अराजक हो जाएगा।

परिणित.वै
आठवीं "अ"

बचपन की यादें

बचपन में खेल कूद, पढ़ाई और मस्ती भरे दिन हुआ करते थे। बचपन में बच्चे बिना किसी तनाव के अपने बचपन को जी सकते हैं। उनके पास कोई समस्या नही होती है। बचपन में सभी के साथ ऐसी घटनाएं घटित होती है, जिनको कभी भूलाया नहीं जाता। मेरे साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ था, जिसके कारण हमारे माता पिता हमारे बचपन को हमेशा याद दिलाते है कि किस तरह से हमने धीरे-धीरे चलना सीखा, फिर वापस गिरकर उठना सीखा और इसके साथ ही बड़े होकर दौड़ लगाना सीखा।

अविष्णा
8 अ

प्रतिभा

जिसे हम 'प्रतिभा' कहते हैं, क्या वह वास्तव में इन दिनों मौजूद है ?
उस समय कला करना एक प्रतिभा थी गायन एक प्रतिभा थी नृत्य एक प्रतिभा थी। एक आदमी को प्रभावित करने वाली हर चीज प्रतिभा थी। लेकिन अब? तेजी से टाइपिंग एक टैलेंट है समोसा खाकर तेजी से रिकॉर्ड बनाने का टैलेंट है। ओह! कौन कहता है कि ये अद्वितीय और प्रभावशाली नहीं हैं? लेकिन अगर इन्हें सम्मान दिया जाए तो क्या हम कम से कम 50 साल बाद भविष्य की कल्पना कर सकते हैं? क्या पता शायद लोग हवाईजहाज उड़ाने को कला कहें या सबसे पतला होना...

प्रांजलि
कक्षा 8 C

पर्यावरण

_सूरज चमक रहा है,
आसमान नीला है,
पंछी उड़ रहे हैं,
और हवा बहुत ठंडी है।_

प्रकृति मां हर संभव प्रयास कर रही है
सुंदरता के सिवा कुछ नहीं देना,
लेकिन हम क्या करते हैं?
उसे गड़बड़ कर दो।

आइए उसे सर्वश्रेष्ठ बनाएं
कम से कम प्रदूषण करके,
और उसकी हरी पोशाक को बचा कर रखो
हमारे बच्चों और बाकी के लिए।

DANIO LINCON
Class: 8th A

हिन्द की फौज

तू देख सीना तानकर, कैसे चलते हैं हम,

जब देते है छप्पर फाड़ कर देते है हम,

टकराना तो दूर , छूने की चाह भी मत रखना,

तख़्ता क्या पूरा तख्त पलट सकते हैं हम।

तू बच सके तो बच, अब हमारे प्रहार से

आसमान भी काँप जाएगा हमारी दहाड़ से

ले तिरंगा कफन पहनाने चले हैं हम

जिसे समझ न आया उसे रुलाने चले हैं हम।

अरे बहुत हुआ समझना और समझाना,

अक्ल के अंधों को है अब जरूरी तस्वीर दिखलाना

बात बराबरी वालों से करते हैं हम ,

शांति दूत रास न आया तो मेघदूत भेजते हैं हम।

तू देख हम सिंहों का शिकार कैसे करते हैं ?

हिन्द की फ़ौज हैं हम शंखनाद कैसे करते है,

है बुलंद हौसला, निश्चय है दृढ़ अडिग ,

तेरे सीने पे छोड़ेगा भारत अपनी छाप अमिट।

मोनिका चौधरी
प्राथमिक शिक्षिका

बेटियाँ

कितनी मासूम कितनी प्यारी

होती हैं बेटियाँ

जैसे घर के बगीचे की क्यारियाँ।

मन को मीठा कर जाएँ

गुड़ सी उनकी बोलियाँ

तीर की तरह चुभे गुस्से में उनकी वाणियाँ

न बोले तो काटने को दौड़े उनकी खामोशियाँ

फिर भी दिल को भा जाए

नादानी सी उनकी शैतानियाँ।

उनके जादू की झप्पी

भुला दे सब परेशानियाँ

त्योहारों में घर

चार –चाँद लगाए उनकी तैयारियां

क्योंकि घर की लक्ष्मी

होती हैं ये प्यारी बेटियाँ।

अनन्या गुप्ता
कक्षा – 11 ब

बॉल पॉइंट पेन का अविष्कार

बॉल पॉइंट पेन का आविष्कार हंगरी के पत्रकार और चित्रकार लेजलो बिरो ने किया था। जिस प्रकार फाउंटेन पेन कागजों पर निशान छोड़ते थे, बिरो को वो बिलकुल पसंद न था। जब बिरो अख़बार की छपाई प्रेस का दौरा का रहे थे, तब उन्होंने वहाँ जल्दी सूखने वाली स्याही का प्रयोग होते हुए देखा। उन्होंने पहले अख़बार की स्याही का प्रयोग फाउंटेन पेन में किया, लेकिन पाया कि स्याही पेन की निब तक पहुँचने के लिए मोती और धीमी थी। फिर वे अपने भाई जियोर्गी बीरो के पास गए, जो एक रसायनज्ञ थे। उन दोनों ने मिलकर पेन की नोक के लिए रोलिंग तंत्र (Rolling Ball Mechanism) बनाया। ये बॉल अपने सॉकेट (Socket) में घूमते हुए स्याही खींचती है और कागज़ पर जमा देती है। इस तरह की नोंक के लिए उनहोंने अलग प्रकार की स्याही बनाई। उन्होंने 1938 में अपनी खोज का पेटेंट करवाया और पेन का नाम बिरो रखा। आज भी कुछ देशों में बॉल पॉइंट पेन को बिरो नाम से जाना जाता है। दुर्भाग्य से द्वितीय विश्वयुद्ध के आगमन ने बिरो भाइयों को हंगरी से भागने पर मजबूर कर दिया क्योंकि वे यहूदी थे। फिर वे अर्जेंटीना बस गए और अपने पेन को ईटरपेन (Eterpen) ब्रांड नाम के तहत व्यावसायिक रूप से बेचना शुरू किया।

नाम - निकुंज
कक्षा - 8A

हमारी नदियाँ

अच्छे लगते हैं, यह नदियाँ मुझे।

धरती और पहाड़ों पर से गुजरती है।

हिमालय से पिघलती बर्फ, बहती पानी बनकें।

कल- कल छल-छल करती नदियाँ।

कितनी सादगी से जीते है,

किस तरह अलग-अलग प्रांतों को जोड़ती है।

अच्छे लगते है, यह नदियाँ मुझे।

नाम – अंश

कक्षा – आठवीं

वर्ग- ब'

पर्यावरण पर कविता

खतरे में है जंगल के जानवर सब ।
हम सब मिलकर इन्हें बचाए ।
आओ हम सब पर्यावरण को सुरक्षित रखें ।
वृक्ष को ना काटे बल्कि हम सब वृक्ष लगाएं ।
वृक्ष है मूल्यवान इन्हें बचाए ।
वृक्ष देते हैं हमें शुद्ध वायु इनमें ना आग लगाए ।
वृक्ष अपने आप उगेगा वृक्षों में फल-फूल बढ़ेगा ।
मैना गाई, कोयल कु के आनंद फैलाए ।
आओ हम सब वृक्ष बचाए ।
वृक्षों पर पक्षी चहकें , पत्ते घास खाते पशु चरते ।
आओ हम सब मिलकर प्रण करें ।
कभी ना इन्हें सताए ।
आओ हम सब पर्यावरण को सुरक्षित रखे ।

नाम - वंश
कक्षा – आठवी
वर्ग - " अ"

सदाबहार

मैं किसी महिला का नाम नहीं ले रहा हूँ।

मैं तो अपनी कविता, आप सबको सुना रहा हूँ॥

कलावती उषा काल में, सूरजमुखी किरण बिखेर रही थी।

शांति वहीं थी जहां, वसंती बयार बह रही थी।

मैना बोली प्रीति से, कोकिला से मधु टपक रही थी।

चम्पा चमेली राजनीगंधा की, खुशबू महक रही थी।

सरस्वती सरिता में, अंजु गंगा की वंदना कर रही थी।

हाथ में लिए सुमन, प्रियंका पुष्पांजलि दे रही थी।

अर्चना आरती लिए लक्ष्मी की, आराधना पूजा कर रही थी।

पुष्पलता की छाया में, ज्योति जगमगा रही थी।

रागिनी राखी लाज लाजवंती की, मोहिनी माधुरी वीणा बजा रही थी।

मैं देखना चाहा शोभा को , हेमा पायल खनका रही थी।

शारदा विंध्यवासिनी ज्ञानवती को , गीता की कविता सुना रही थी।

सीता सावित्री मीरा को, काजल से रेखा बता रही थी।

शिला पर प्रमिला मिली, संगीता उर्मिला को बुला रही थी।

माया की ममता पर, जयललिता इठला रही थी।

संध्या का गमन हुआ, श्यामा रोशनी जला रही थी।

चन्द्रमुखी सी चाँदनी, निशा में चंदा चमक रही थी।

सोना मोती भरकर बिस्तर पर, रूपाली आ रही थी।

सपना देखती रही, कल्पना करती रही, आदर्श की जब,

नयन खुली तो आम्रपाली आ रही थी।

आदर्श कुमार
कक्षा- 11 ब

सुख –दुख का आना –जाना

सुख का ना और दुख का जाना

जीवन का है यही ताना –बाना।

फिर किसी रोज दुख का पलटकर लौटना

और सुख का कहीं गुम हो जाना

जीवन का है यही ताना –बाना।

जीवन की तो यही कहानी, कुछ दिन हँसे कुछ दिन रोएँ

जब सुख नहीं सदा के लिए ठहर पाए,

तो ये दुख काहे अपनी बिसात बिछाए ,

कुछ स्थिर नहीं है जग में, मौसम आए – मौसम जाए

एक दिन सब निश्चित ही बादल जाना

जीवन का है यही ताना –बाना।

जाने ईश्वर को हम काहे भुलाए , जब सुख की घड़ी आए

जब दुख की बदरा छाए, तो केवल ईश्वर ही मन को भाए ,

जीवन का तो यही सत्य है, अपना नहीं सब पराया है

बस जो है, आज ही है, खुश रहो मुस्कराओ .. यही एक उपाय है

सुख-दुख का आना –जाना,

एक दिन सब निश्चित ही बादल जाना

जीवन का है यही ताना –बाना।

कुमारी आइश्री
कक्षा – 10 ब

वार्षिकोत्सव की झलकियाँ

एकता दौड़ की झलकियां

खेल दिवस की झलकियाँ

हिन्दी पखवाड़ा की झलक

योग दिवस की झलक

ओणम की झलक

टीवी का जादू

अब टीवी घर-घर आया है ।
सबको ही मित्र बनाया है ।
बच्चों का पढना भी छूटा,
क्या अद्भुत चक्र चलाया है ?
नहीं खेलते बच्चे अब तो,
पार्क हो गए सुने अब तो।
बचपन, बचपन-सा ना दिखता,
क्या नया जमाना आया है ?
सब कुछ बदल रहा है घर में ।
देख-देख के डरता मैं ।
बचपन कि रंगोली छटी ,
और बढ़ी तनाव की छाया है ।

-साक्षी कुमारी
कक्षा-7

संस्कृत कृतयःतेषां कर्तारं

१) महाभारतम् - महर्षि वेदव्यासः

२) रामायणं - महर्षि वाल्मीकिः

३) उत्तररामचरितं - भवभूतिः

४) अभिज्ञानशाकुन्तलम् -महाकविकालिदासः

५) पञ्चतन्त्रम् -पण्डित विष्णु शर्माः

६) राजतरंगिणी - कल्हण

७) मुद्राराक्षसं - विशाखादत्तः

८) अर्थशास्त्रं - चाणक्यः

९) मृच्छकटिकं - पाणिनीः

सात्विक
कक्षा - 8 अ

बच्चों को दीजिए संस्कार

टीवी देने से पहले टाइम दीजिए ।

संपत्ति देने से पहले सम्मति दीजिए ।

स्वतंत्रता देने से पहले संस्कार दीजिए ।

शिक्षा देने से पहले संस्कृति दीजिए ।

व्यापार देने से पहले व्यवहार दीजिए ।

कॉलेज में भेजने से पहले कर्म का नॉलेज दीजिए ।

दोस्त देने से पहले दादा-दादी का दुलार दीजिए ।

परिवर्तन देने से पहले माता-पिता का प्यार दीजिए ।

जमाने की हवा लगने से पहले अपना अनुभव दीजिए ।

तो बन जाएगा आपकी आँखों का तारा ,

सारे संसार का दुलारा ।

प्रिया सिंह

कक्षा - 10 ब

माँ की दर्द भरी कहानी

माँ तब भी रोती थी जब बेटा पेट में लात मारता था ।

माँ तब भी रोती थी जब बेटे को चोट लग जाती थी ।

माँ तब भी रोती थी जब बेटा बुखार में तड़पता था।

माँ तब भी रोती थी जब बेटा खाना नहीं खाता था ।

और माँ आज भी रोती है जब बेटा खाना नहीं देता है ।

शिक्षा - इससे हमें एक शिक्षा जरुर मिलती है कि जो माता जन्मदाता है, उन्हीं के लिए हम इस दुनिया में आए हैं । माँ की इज्जत करो। माँ का आदर करो और माँ का सम्मान करो ।

उपासना शर्मा

कक्षा - 10 ब

मज़ेदार चिट्ठी

पता : लापता नगर

थाना : सब्जीपुर

ज़िला : खेतगंज

दीदी गोभी,

सादर प्रणाम।

प्याज की शादी आलू नगर श्री टमाटर के सुपुत्र आयुष्मान गाजर के साथ तय हुई है। इस मौके पर सेम दीदी भी आ रही है। बैंगन मामा और शलगम बुआ भी पधार रही है। कृपया आप भी आकर वातावरण को हरा-भरा एवं ताजा बनाएँ।

आते समय आप अदरक और छोटी इलायची को भी साथ लाएँ। आप स्टेशन पर जल्द से जल्द पहुंचिएगा क्योंकि मिर्ची एक्सप्रेस आज समय से चल रही है।

आपका प्यारा –

कटहल

नाम - स्नेहप्रिया

कक्षा - 10 ब

चुटकलें

टीचर : आज मैं तुमसे सवाल पूछूंगी।
सोहन : जी पूछिए।
टीचर : आपसे मिलकर खुशी हुई ऐसा किसने कहा ?
सोहन : जी खुशी के पापा ने खुशी की मम्मी से कहा।
टीचर बेहोश।

दादी अपनी शादी की वीडियो देखा रही थी
पोता : दादी ये आदमी कौन है ?
दादी : अरे यही तो तेरे दादा है।
पोता : दादा तो इतने स्मार्ट लगा रहे है फिर आप इस बुड्ढे के साथ क्यों रहती हो ?

टीचर : बीरबल कौन है ?
सोनो : पता नहीं सर।
टीचर : पढ़ाई पर ध्यान दो पता चले।
सोनो : विककी , राम, मोहन कौन हैं ?
टीचर : मुझे क्या पता ?
सोनो : बेटी पर ध्यान दो तो पता चलेगा।

मम्मी : बेटा जरा पापा को बुलाना।
बेटा (पापा से) : चलो बुलावा आया है, माता ने बुलाया है।
पापा : जय माता दी .... !

एक बुजुर्ग : बेटा कैसे हो ... ?
बच्चा : ठीक हूँ .. !!!
बुजुर्ग : पढ़ाई कैसी चल रही है ?
बच्चा : बिलकुल आपकी जिंदगी की तरह .... !!
बुजुर्ग : मतलब ....?
बच्चा : भगवान भरोसे .... !!!

चैतन्या
कक्षा – 6 ब

केंद्रीय विद्यालय क्रमांक -1, पणम्बूर, मंगलूरु – 575010

KENDRIYA VIDYALAYA NO. 1, PANAMBUR, MANGALURU – 575010

Class – X TOPPERS FOR SESSION : 2021-22			
S BALA YAMINI	RAKSHA N S	SHWETA K	SHIVANI B
492	492	491	491
98.4	98.4	98.2	98.2
FIRST	FIRST	SECOND	SECOND

JNANESHWAR K	REGHURAM R	VASUDEV AJAY
488	488	488
97.6	97.6	97.6
THIRD	THIRD	THIRD

Class – XII TOPPERS FOR SESSION : 2021-22			
SHREYAS KUMAR P M	A AKSHAYA	RAKSHA	ANANDAPADMANABHAN B
482	473	470	466
96.4%	94.6%	94.0%	93.2%
FIRST	SECOND	THIRD	FOURTH

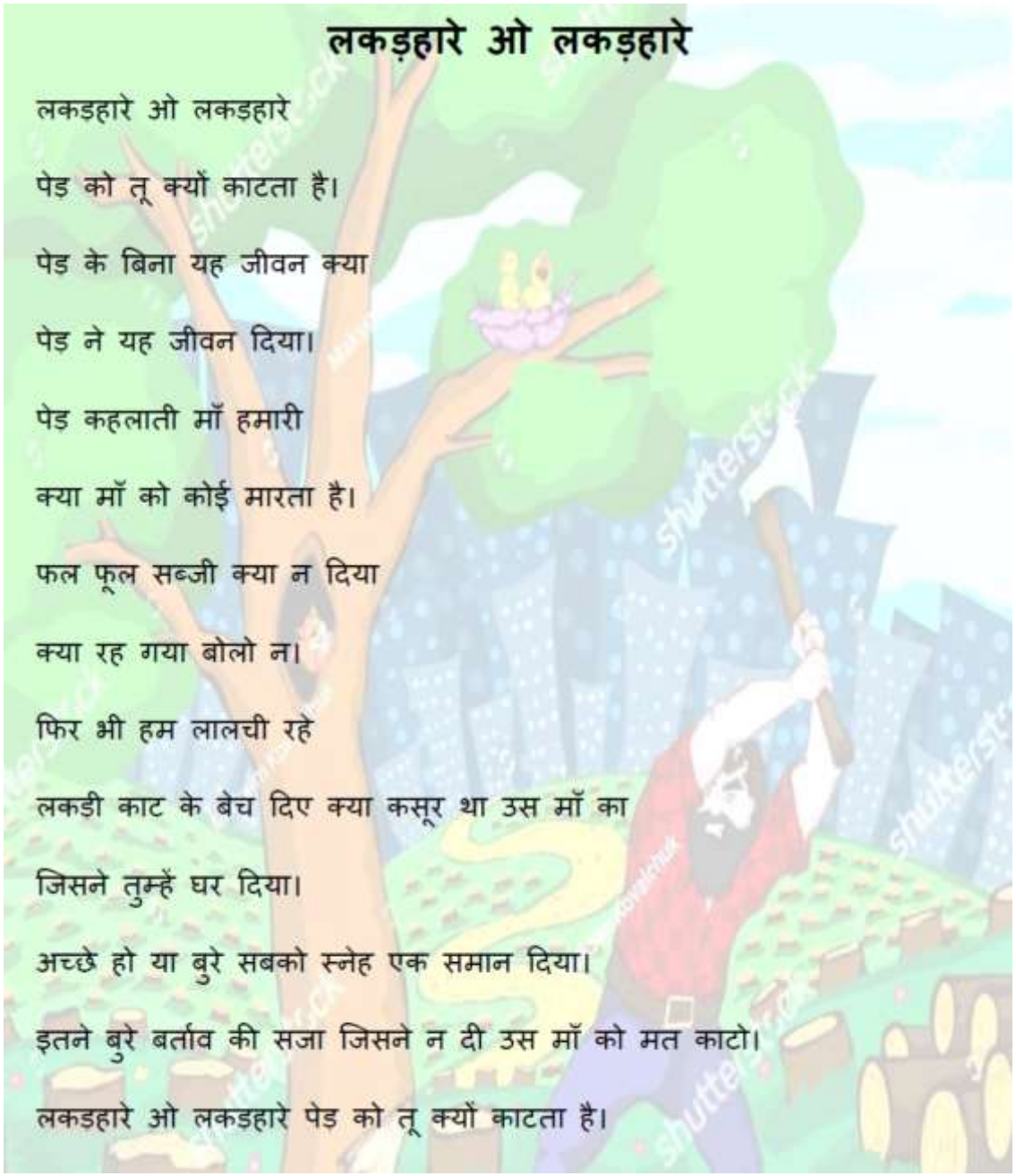

लकड़हारे ओ लकड़हारे

लकड़हारे ओ लकड़हारे

पेड़ को तू क्यों काटता है।

पेड़ के बिना यह जीवन क्या

पेड़ ने यह जीवन दिया।

पेड़ कहलाती माँ हमारी

क्या माँ को कोई मारता है।

फल फूल सब्जी क्या न दिया

क्या रह गया बोलो न।

फिर भी हम लालची रहे

लकड़ी काट के बेच दिए क्या कसूर था उस माँ का

जिसने तुम्हें घर दिया।

अच्छे हो या बुरे सबको स्नेह एक समान दिया।

इतने बुरे बर्ताव की सजा जिसने न दी उस माँ को मत काटो।

लकड़हारे ओ लकड़हारे पेड़ को तू क्यों काटता है।

समीक्षा के

कक्षा – 7 ब